रूमटॉइड आर्थराइटिस में आयुर्वेदिक संपूर्ण प्रणाली

[स्रोत: पी.आई.बी.]

चर्चा में क्यों?

हाल ही में एक अध्ययन ने दीर्घकालिक ऑटोइम्यून रोग [रुमेटॉइड आर्थराइटिस (RA)] के प्रबंधन में [आयुर्वेदिक संपूर्ण प्रणाली (AWS)] की प्रभावशीलता पर प्रकाश डाला।

- शोध से पता चलता है कि AWS न केवल RA के लक्षणों को कम करता है बल्कि रोगियों में **सामान्य चयापचय संतुलन** के पुनर्स्थापन में भी मदद करता है।
- यह पारंपरिक चिकित्सा उपचारों के लिये एक आशाजनक **पूरक उपगाम** प्रस्तुत करता है।

रुमेटॉइड आर्थराइटिस के संदर्भ में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **परिचय:** RA एक **दीर्घकालीन सूजन/शोथ संबंधी रोग** है, जो **जोड़ों की परत/अस्तर को प्रभावित** करता है, जिससे दर्दनाक सूजन होती है, जो अंततः [अस्थियों के क्षय] और **जोड़ों की विकृति का कारण** बन सकती है।
    - कुछ लोगों में यह स्थिति **त्वचा, आँखों, फुफ्फुस, हृदय** और **रक्त वाहिकाओं** सहित शरीर के कई अंगों को नुकसान पहुँचा सकती है।
    - यह एक [ऑटोइम्यून रोग] है। ऐसा तब होता है जब प्रतिरक्षा प्रणाली ठीक से काम नहीं करती है और **जोड़ों की परत** पर हमला करती है, जिसे **सिनोवियम** कहा जाता है।
- **अध्ययन का महत्त्व:** यह **'संप्राप्ति विघातन'** की आयुर्वेदिक अवधारणा पर आधारित है, जिसके तहत **रोग उत्पन्न करने वाली प्रक्रिया को नष्ट किया जाता है** और शरीर के **'दोषों' (जैव-ऊर्जाओं)** को **वापस संतुलन में लाया जाता** है।
    - यह शोध महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसके तहत आयुर्वेदिक संपूर्ण-प्रणाली दृष्टिकोण का उपयोग करके RA में पैथोलॉजी रिवर्सल की क्षमता का पता लगाया जाता है।
- **प्रेक्षित प्रमुख नैदानिक सुधार:**
    - **रोग गतिविधि में कमी: रोग गतिविधि स्कोर-28 एरिथ्रोसाइट अवसादन दर (DAS-28 ESR)** में उल्लेखनीय कमी आई, जो RA की गंभीरता का आकलन करने के लिये एक महत्त्वपूर्ण उपाय है।
    - **जोड़ों की सूजन/शोथ में कमी:** AWS उपचार प्राप्त करने वाले रोगियों में **सूजन/शोथ** और **जोड़ों के क्षय संबंधी रोग** दोनों की कुल संख्या में कमी आई।
    - **विषाक्त पदार्थों में कमी:** शरीर में विषाक्त पदार्थों का मूल्यांकन करने वाले **Ama गतिविधि माप (AAM)** स्कोर में हस्तक्षेप के बाद महत्त्वपूर्ण कमी देखी गई, जो तंत्रिका/दैहिक शोथ और विषाक्तता में कमी का संकेत देता है।
    - **मेटाबोलिक प्रोफाइल में बदलाव:** AWS उपचार के बाद **लाइसिन, क्रिएटिन** आदि जैसे असंतुलित मेटाबोलिक मार्कर स्वस्थ नियंत्रण में देखे गए सामान्य स्तरों की ओर शिफ्ट होने लगे, जो अधिक संतुलित मेटाबोलिक स्थिति में वापसी का संकेत देते हैं।
    - **अपनी तरह का पहला साक्ष्य:** यह RA के प्रबंधन में AWS की नैदानिक प्रभावकारिता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने वाला पहला अध्ययन है।
    - यह लक्षणों में कमी और मेटाबोलिक सामान्यीकरण के **दोहरे लाभ** पर प्रकाश डालता है, जो संभावित रूप से रोगियों के लिये दीर्घकालिक सकारात्मक परिणामों की पुष्टि करता है।
- **एकीकृत चिकित्सा (Integrative Medicine) के लिये निहितार्थ:** यह अध्ययन पारंपरिक आयुर्वेदिक विधियों को आधुनिक चिकित्सा उपागमों के साथ एकीकृत करने की क्षमता को रेखांकित करता है।
    - इस तरह के इंटीग्रेशन से रोगी के उपचार, विशेषकर RA जैसी दीर्घकालिक स्थितियों के प्रबंधन में बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

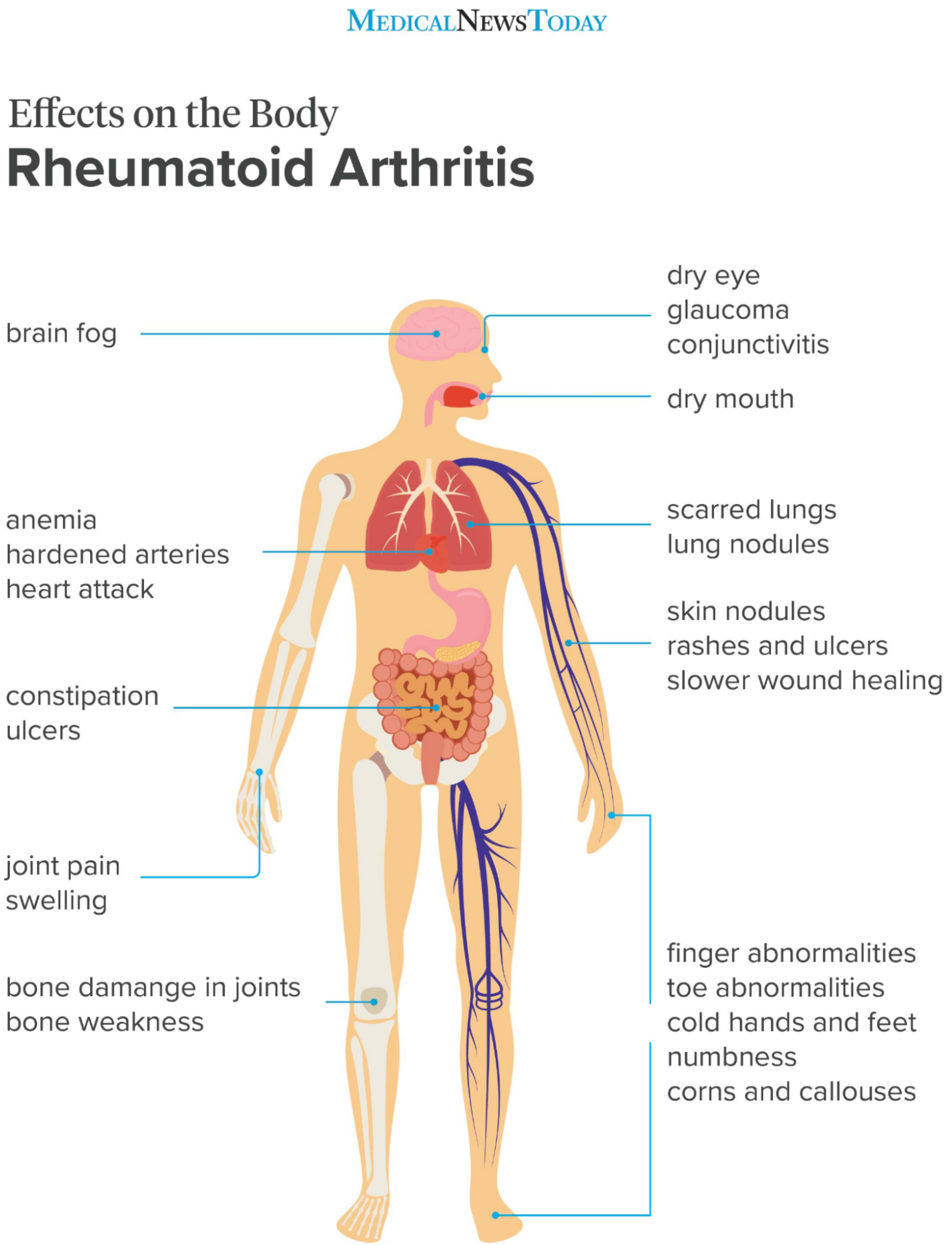

आयुर्वेदकि संपूर्ण प्रणाली क्या है?

- **परचिय:** आयुर्वेद भारत की टाइम टेस्टेड पारंपरकि चकित्सा प्रणाली है।
  - **'आयुर्वेद'** शब्द जसिका अर्थ है **'जीवन का ज्ञान'**, दो संस्कृत शब्दों से मलिकर बना है, अर्थात **'आयु'** जसिका **अर्थ है 'जीवन'** और **'वेद' जसिका अर्थ है 'ज्ञान' या 'वज्ञान'**।
  - आयुर्वेद चकित्सा की **एक संपूर्ण-शरीर (समग्र) प्रणाली** है। इस पद्धतमिें **स्वास्थ्य और कल्याण के सभी पहलुओं के लयि एक प्राकृतकि उपागम** अपनाया जाता है।
- **आयुर्वेदकि रणनीत:** आयुर्वेद इस वचिार पर आधारति है कि प्रत्येक व्यक्तमिें कुछ **जीवन शक्तयिाँ (दोष)** होती हैं और ब्रह्मांड में सब कुछ जुड़ा

हुआ है।

  - किसी एक **क्षेत्र में असंतुलन दूसरे क्षेत्र को प्रभावित कर सकता है।**
  - जब **असंतुलन को ठीक नहीं किया** जाता है, **तो बीमारी बढ़ सकती है और अस्वस्थता हो सकती है।**
  - आयुर्वेद में **अधिकतर पोषण, जीवनशैली में बदलाव** और **प्राकृतिक उपचार का प्रयोग** किया जाता है।
  - इनका प्रयोग **संतुलन और स्वास्थ्य के पुनर्स्थापन/रिवर्सल के लिये** किया जाता है।
- **तीन प्रमुख ऊर्जाएँ (दोष):** आयुर्वेद **तीन आधारभूत प्रकार की ऊर्जा** या **कार्यात्मक सिद्धांतों** की पहचान करता है, जो प्रत्येक जीव और प्रत्येक वस्तु में मौजूद हैं।
  - **वात:** यह **श्वसन, पलक झपकाने, माँसपेशियों की गतिविधि** और **तरल पदार्थों के परिसंचरण** जैसे कार्यों को नियंत्रित करता है।
  - **पित्त:** यह **पाचन, अवशोषण, पोषण** और **शरीर के तापमान** को नियंत्रित करता है।
  - **कफ:** यह शरीर के **संरचनात्मक घटकों को नियंत्रित करता है**, **जोड़ों में स्नेहकता** प्रदान करता है, **त्वचा को नमी** देता है और **प्रतिरक्षा को बनाए रखता है।**

दृष्टि The Vision

आयुष चिकित्सा पद्धति

आयुष में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी शामिल हैं, आयुर्वेद का 5000+ वर्षों का प्रलेखित इतिहास है।

आयुर्वेद

भगवान ब्रह्मा को आयुर्वेद का प्रथम प्रवर्तक माना जाता है

- **संहिता काल (1000 ईसा पूर्व):** परिपक्व चिकित्सा प्रणाली के रूप में उभरा
  - **चरक संहिता:** सबसे प्राचीन और आधिकारिक संहिता
  - **सुश्रुत संहिता:** आठ विशिष्टताओं में मौलिक सिद्धांत और चिकित्सीय विधियाँ प्रदान करती है
- **मुख्य शाखा:**
  - **आत्रेय पुनर्वसु**- चिकित्सकों की शाखा
  - **दिवोदास धन्वंतरि** - शल्यचिकित्सकों की शाखा

आयुर्वेद की शाखाएँ

- काय चिकित्सा- चिकित्सा।
- शल्य चिकित्सा- सर्जरी।
- शालाक्य तंत्र- ईएनटी और नेत्र विज्ञान।
- बाल रोग चिकित्सा।

- अगद तंत्र- विष विज्ञान।
- भूतविद्या - मनोरोग।
- रसायन- कायाकल्प चिकित्सा और जराचिकित्सा।
- वाजीकरण तंत्र- सेक्सोलॉजी।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

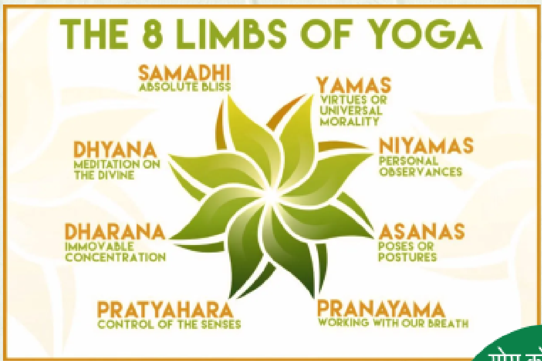

योग को सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि ने व्यवस्थित रूप में योगसूत्र के रूप में प्रतिपादित किया

- **प्राकृतिक चिकित्सा:** 5 प्राकृतिक तत्वों - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की सहायता से उपचार
  - शरीर की स्व-उपचार क्षमता सिद्धांतों और स्वस्थ जीवन के सिद्धांतों पर आधारित
  - रोग-केंद्रित दृष्टिकोण के स्थान पर व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है

यूनानी

ग्रीस में अग्रणी, अरबों द्वारा 7 सिद्धांतों के रूप में विकसित (उमूर-ए-तब्बिया)

- बुकरात (हिप्पोक्रेट्स) और जालीनूस (गैलेन) की शिक्षाओं के ढाँचे के आधार पर
  - चार ह्यूमर्स का हिप्पोक्रेटिक सिद्धांत अर्थात् रक्त, कफ, पीला पित और काला पित्त
- WHO द्वारा मान्यता प्राप्त और भारत द्वारा वैकल्पिक स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में आधिकारिक दर्जा प्रदान किया गया

सिद्ध

10000 - 4000 ईसा पूर्व; सिद्धर अगस्तियार- सिद्ध चिकित्सा के जनक

- निवारक, प्रोत्साहनात्मक, उपचारात्मक, पुनर्जीवनात्मक और पुनर्वासात्मक स्वास्थ्य देखभाल
- **4 घटक:** लैट्रो-रसायन विज्ञान, चिकित्सा अभ्यास, योग अभ्यास और बुद्धि
- 3 निदानात्मक ह्यूमर्स (मुक्कुट्रम) और 8 महत्त्वपूर्ण परीक्षणों (एन्वागई थेरवु) पर आधारित है

आयुर्वेद के 3 गुण (त्रिदोष): वात, पित्त और कफ

सोवा रिग्पा

उत्पत्ति: भगवान बुद्ध के समय 2500 वर्ष पूर्व भारत में

- लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश आदि के हिमालयी क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सा।
- भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 (वर्ष 2010 में संशोधित) द्वारा भारत में मान्यता प्राप्त।

होम्योपैथी

जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया

- जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया।
- औषधियाँ मुख्यतः प्राकृतिक पदार्थों (पौधे उत्पाद, खनिज, पशु स्रोत) से तैयार की जाती हैं।
- वर्ष 1810 में यूरोपीय मिशनरियों द्वारा भारत में लाया गया; वर्ष 1948 में आधिकारिक मान्यता प्रदान की गई।
- **3 प्रमुख सिद्धांत:**
  - सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटूर ("सम: समम् शमयति" या "समरूपता")
  - सिंगल मेडिसिन
  - मिनिमम डोज़

दृष्टि The Vision
Drishti IAS

UPSC सिविल सेवा परीक्षा विगत वर्ष के प्रश्न (PYQ)

??????????

प्रश्न. निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा एक भारतीय षड्दर्शन का भाग नहीं है? (2014)

(a) मीमांसा और वेदान्त
(b) न्याय और वैशेषिक
(c) लोकायत और कापालिक
(d) सांख्य और योग

उत्तर: (c)

प्रश्न. भारत में दार्शनिक विचार के इतिहास के संबंध में, सांख्य सम्प्रदाय से सम्बन्धित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2013)

1. सांख्य पुनर्जन्म या आत्मा के आवागमन के सिद्धांत को स्वीकार नहीं करता है।
2. सांख्य की मान्यता है कि आत्म-ज्ञान ही मोक्ष की ओर ले जाता है न कि कोई बाह्य प्रभाव अथवा कारक।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (b)

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2010)

1. टैक्सस वृक्ष प्राकृतिक रूप से हिमालय क्षेत्र में पाया जाता है।
2. टैक्सस वृक्ष को रेड डेटा बुक में सूचीबद्ध किया गया है।
3. टैक्सस वृक्ष से प्राप्त ‘टैक्सोल’ नामक औषधि पार्किंसंस रोग के विरुद्ध प्रभावी है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/use-of-ayurvedic-whole-system-in-rheumatoid-arthritis